International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 20-08-2022, Accepted: 05-09-2022, Published: 21-09-2022
Volume 4, Issue 2, 2022, Page No. 44-46

मारवाड़ प्रदेष के ग्रामीण क्षेत्रों से प्राप्त अभिलेखों का सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विष्लेषण (1500 से 1700 ई.वी. के विषेष संदर्भ में)

कैलाश सोनगरा
सहायक आचार्य, एम. बी. आर. पीजी राजकीय महाविद्यालय, बालोतरा, बाड़मेंर, राजस्थान, भारत

सारांश
राजपूताना के इतिहास में मारवाड़ रियासत भी अपना विशेष स्थान रखती है। मारवाड़ प्रदेश के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में पाये जाने वाले अभिलेखों में यहाँ के शासकों की उदारता, दानशीलता, धार्मिक प्रवृत्तियां, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं। यहाँ के अभिलेखों में प्रशस्ति लेख, स्तम्भ लेख, सती लेख, स्मारक लेख तथा मंदिर लेख इत्यादि मिलते हैं।

मूल शब्दः लेख, अभिलेख, शिलालेख, ताम्रपत्र

प्रस्तावना
सृष्टि के आरम्भ से लेकर प्रतिक्षण जो घटना घटित होती है, वह कुछ क्षण पश्चात् वह इतिहास में बदल जाती है। वहीं ऐतिहासिक घटना मनुष्य के जीवन में महत्त्वपूर्ण समझकर तथा अपनी ख्याति को चिरस्थायी बनाने के लि प्रस्तर पर उत्त्कीर्ण करवाते है, उसी लेख को अभिलेख या शिलालेख कहते है। अभिलेख का अर्थ–अभी लिखा हुआ लेख। अर्थात् तत्क्षण लिखा हुआ आज्ञा रूपी लेख जो जन समुदाय के लिए लाभदायक होता है। यहीं लेख जब शिला पर उत्त्कीर्ण करवाये जाते है, तो वह शिलालेख में बदल जाते है। इसीलिए शासकों सामंतों तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा अपने द्वारा किये गये कार्यों को स्थायी बनाने के लिए शिला पर उत्त्कीर्ण करवाते है।वासुदेव उपाध्याय के शब्दों में–''अभिलेख का तात्पर्य है कि किसी वस्तु पर कोई विषय उत्त्कीर्ण किया जाय।''[1]
प्राचीन काल से ही विभिन्न शासकों द्वारा अपनी कीर्ति को यशस्वी बनाये रखने के उद्देश्य से शिलालेख उत्त्कीर्ण करने की परम्परा का निर्वाह किया। क्योंकि ये शिलालेख ही वह साधन है जो प्रत्यक्ष रूप से प्रमाण प्रस्तुत करते है, इसके विपरीत अन्य साधन मूक है।
मारवाड़ प्रदेश जिसे मरु क्षेत्र कहते है। जो नावां, डीडवाना, नागौर, पाली, जालोर, जोधपुर से होते हुए बाड़मेर जिले तक फैला हुआ था। इस विशाल भू–भाग के गांवों, कस्बों, नगरों में बिखरे पड़े अनगिनत प्रशस्ति लेख, ताम्रपत्र, शिलालेख, स्मारक अभिलेख, सती लेख, मंदिर लेख इत्यादि मिलते हैं। इन अभिलेखों में तत्कालीन युग की आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक जानकारी मिलती हैं। इस शोध आलेख में मारवाड़ के कुछ प्रमुख अभिलेखों की जानकारी प्रस्तुत की जा रही हैं।

दानषीलता
मारवाड़ के राजा, सामंत तथा शासकों के द्वारा समय–समय पर ब्राह्मण, चारण तथा याचक जातियों को कुछ गांव, परगने या जागीरे दी जाती थी। जो उनकी स्वामी भक्ति या उनकी कर्त्तव्य परायणता को दर्शाती है। ऐसे ही कुछ अभिलेखों के उदाहरण इस प्रकार है–
वि.सं. 1665, भाद्रपद सुदि 2 को लोलासनी (जोधपुर) में स्थापित इस ताम्रपत्र में महाराजाधिराज सूरजसिंह (सूरसिंह) द्वारा चारण सासण (दान) के रूप में दिये जाने का उल्लेख प्राप्त होता है।[2]

मूलपाठ
।।श्री परमेसरजी स. छ।।
श्री कृष्णजी (तलवार का चिह्न) सभी

1. ।। स्वस्ति श्री महाराजाधिराज मा।।
2. हा राजा श्री सूरजसिंह जी वचना
3. तु कीवर (कंवर) गजसिंघ जोग्य सु प्रसाद वंच
4. जो त्था (तथा) वासी वणलीया का चारण रतनु
5. दाना नु मोकल के बेटा नु गाँव। लाला
6. ..... वासनी पटी सीवाणा तफा घुमाड़ा
7. रेष (ख) 200 दोयसेरी को सासण उदक
8. कर दियो छे चारण रतनु दाना नु तीणीरी

9. आल औलाद भोगजी श्रीहजूर ने दवा (द्रुवा)
10. देसी लुपे (लोपकरे) स हो श्री परमेसरजी बेमु .....
11. ष (ख) सा।। 1665 मीती भादवा सुद 2 (द्वितीया) पाये दूज
12. तक त (ख) गढ़ जोधपुर मु. ।। विहारपुर (बुरहानपुर) दवे श्री मुष (ख)

वि.सं. 1677, कार्तिक शुक्ला 7 को बुरहानपुर (दान के आदेश का) स्थान प्रदत्त गाँव पांचटिया (सोजत), पाली में स्थापित उक्त ताम्रपत्र लेख में उपर्युक्त संवत् और तिथि को बुरहानपुर से आदेश देते हुए सोजत परगने का गाँव पांचटिया कृपापूर्वक आढा दुरसा और उसके पुत्र किसना और भारमल को प्रदान किया गया।[3]

मूलपाठ

।श्री परमेश्वर जी सत्य।
श्री रामजी (खांडे का चिह्न) साही
(स्वस्ति री महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह वचनात आढ़ा दुरसा मेहाउत किसना दुरसाउत नु मया करि ने गंव। त्तंबार पतरे संसणकरि
दयो श्री राजाजी रा बेटा पोत्रा हुसी सु दुरसा व किसना रा बेटा पोत्र ओ गंव ससण पा (ल) सी जिको उथ पै तिणनु हींदुवा गै गाइ ने तुरकंणो सुवर
छै गंव भारमल किसना नु दीयो छै बीजो कोई बोलण न पावै संवत् 1677
रा काती सुदि 7 रउ मुवकम बृहंनपुर दुवे श्री (मुष)

सती अभिलेख

सती अभिलेखों में मारवाड़ की रानियों या सामंतों की पत्नियों के सती होने के प्रमाण मिलते है। जब कोई राजा या सामंत किसी युद्ध में वीरगति को प्राप्त होता तब पीछे उसकी पत्नी सती होती थी।

वि.सं. 1637 शाके 1502 माघ सुदि 7, सप्तमी (बुधवार, जनवरी 11, 1581 ई.) डॉ. रघुवीरसिंह सारण (सोजत तहसील, जिला–पाली, सिरीयारी गाँव के पास में) महाकाल मन्दिर के समीप स्थापित उक्त अभिलेख में राव मालदेव के पुत्र राव चन्द्रसेन की सारण सिरीयारी की गाल (घाटी) में हुई मृत्यु पर उनकी पाँच रानियों के सती होने का उल्लेख किया गया है।[4]

मूलपाठ

1. ''श्री गणेशायनमः संवत् 1637 शाके
2. 152 (1502) माघ मासे सू (शु) कल पक्षे सातिव (सप्तमी) दिने
3. 7 रा श्री चन्द्रसेनजी देवी कुला स .....
4. ती पंच हुई (ई) यं ब्र (ब) सा (ह्य) वरूणेंद्र (रूद्र) मरु
5. तः सतवन्ती (स्तुवन्ति) दिव्ये (व्यैः) सत्वै (स्तवैः)

वै (वें) दै (:) सांग पव (द) क्रमोप.....।।''

वि.सं. 1639 वैशाख सुदि 5 या (15) का उत्त्कीर्ण सोजत नगर का दुर्ग, शहर के पार्श्व स्थित दुर्ग में प्रवेश करते ही पत्थर के भग्न चबूतरे पर पड़ा सती लेख स्थापित है।[5]

मूलपाठ

1. ''संवत् 1639 (9) व (?) वी षे (वर्षे) से .....
2. ..... सश (वैशाख) सुदी व 5 (शायद 15) दीन
3. .....नावा णीह प ..... त्र .....
4. श न त्र ..... पात्तर पत्री
5. रा शाहर जजानीण ..... मंछी
6. स पा .....।'' (अस्पष्ट)

खेजड़ला (बिलाड़ा तहसील, जोधपुर का तालाब, उसकी पुतली) में स्थापित वि.सं. 1679, आसोज (आश्विन) सुदि 2 को उत्त्कीर्ण लेख में एक माता अपनी गोद में मृत बालक को लिए हुए है और उनके दोनों और चाँद और सूर्य खुदे हुए है।[6]

मूलपाठ

''संवत् 1679 वरषे भती (मिति) असज (आसोज) सुद 2
..... बेटा ..... काम ..... सुवर
..... सती .....।''

धार्मिक लेख

मारवाड़ क्षेत्र धर्म के क्षेत्र में भी महत्ती भूमिका निर्वाह करता हैं। यहाँ पर अनेक धार्मिक संप्रदायों का बोलबाला रहा है। शैव, शॉक्त, वैष्णव, जैन, इस्लाम तथा निर्गुण संत संप्रदाय प्रमुख रहे हैं। मारवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त धर्म संबंधी अभिलेखें में यहाँ के राजा, महाराजा एवं उनकी रानियों द्वारा समय–समय पर धार्मिक क्रिया–कलापों से संबंधित अभिलेख भी मिलते है। जो उनकी धार्मिक रूचि को दर्शाते है। मध्यकालीन मारवाड़ के शासनकाल में यहाँ धनाढ्य वर्ग में जैन अनुयायियों की बहुलता होने से जैन मन्दिरों की अधिकता प्राप्त होती है यथा किराडू के जैन मन्दिर–पाली के जैन मन्दिर आदि। बाड़मेर से प्राप्त ऋषभदेव मन्दिर में निर्मित सभामण्डप आकर्षण का केन्द्र रहा है। यह मन्दिर रावत उदयसिंह के

शासनकाल में वि.सं. 1676 में श्री सुमतिनाथ बिंब की प्रतिष्ठा भट्टारक जिनराज सूरि के (धर्म) विजयराज राज्य में श्री संघ ने करवाया जिसका मूलपाठ इस प्रकार है–

''संवत् 1676 वर्षे माह (माघ) सुदि 15 रविवार पुश (पुष्य) नक्षत्रे राउत श्री उदयसिंहजी विजयराज्ये श्री सुमतिनाथ .... श्री संघ करावऊ। सूत्रधार सीमा, नारायण, नरसंघ। खरतर गच्छ भट्टार्क जिनराज सूरि (धर्म) विजयराज्ये।''[7]

केकिन्द (किष्किंधा) मेड़ता परगना (मेड़ता से पश्चिम में 14 मील) में स्थापित उक्त स्तम्भ लेख वि.सं. 1665 (ई. सन् 1608 जसनगर) में जोधपुर के राठौड़ शासकों–मल्लदेव (मालदेव) उदयसिंह (बृहदराज–मोटाराजा), जिसे बादशाह अकबर ने मोटाराजा की शाही उपाधि से सम्मानित किया और सूर्यसिंह (सूरसिंह), गजसिंह तक वंशावली देते हुए श्रेष्ठी नापा व उसकी धर्मपत्नी के धर्मार्थ कार्यों का उल्लेख किया गया है। इस दम्पत्ति ने मन्दिर के मण्डप आदि का निर्माण कर वहाँ स्तम्भ स्थापित करवाया।

मूलपाठ

(अंशतः) ''ना (पु) त्र वित्ता
.... हरणं न चौरी (चौर्य) न न्यास मोशेन (1)
न च मद्यमांस नाखेट को नान्यवशा निशेवे। .....
..... तथादि स्थितिः शासति राज्यमस्मिन्।। 2।।
सम्पूर्ण मूल पाठ–
''।। र्द.।। नमो वीतरागाय।। श्री सिद्धि र्भवतु।
स्वस्ति श्रियामास्पद माप्त सिद्धि
र्ज्जगत् त्रये यस्य भवत् प्रसिद्धिः।[8]

वि.सं. 1594 (चैत्रादि) वैशाख सुदि 10 को उत्त्कीर्ण, जंगल में पड़ी भगवती की खण्डित मूर्त्ति, सिवाना, जिला–बाड़मेर में स्थापित इस शिलालेख में देवी प्रतिमा के चरण स्थल में महाराज श्री मालदेव का नामोल्लेख हुआ है।

मूलपाठ

''संवत् 15..... (94) ..... ष (वैशाख ?) श्री सुदि 10 गउ पुख (गुरू पुष्य) श्री मालदे (व) सुत .... ल .....द.....धा.....ष.....त्त..... स ..... द ..... स .....।[9]

इस प्रकार उपरोक्त शोध आलेख में मारवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त अभिलेखों से मारवाड़ की सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक पक्ष की मध्यकालीन युग की महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं। इसमें तत्कालीन युग के राजा, महाराजा, सामंतों तथा जैन मुनियों की भी जानकारी भी मिलती हैं।

संदर्भ सूची

1. उपाध्याय, वासुदेव, प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन, पृ. 35
2. श्रीमाली, गोविंदलाल, राजस्थान के अभिलेख, भाग 2, जोधपुर, 2001, पृ. 363
3. वही, पृ. 385
4. वही, पृ. 343
5. वही, पृ. 345
6. वही, पृ. 387
7. नाहर, श्री पूर्णचंद्रजी, जैन लेख संग्रह, भाग–1, कलकत्ता, 1918, पृ. 179
8. श्रीमाली, गोविंदलाल, राजस्थान के अभिलेख, भाग 2, जोधपुर, 2001, पृ. 364
9. वही, पृ. 323